वागीश्वरी साहित्यिक पटल का तृतीय वार्षिकोत्सव सम्पन्न

प्रयागराज स्थित साहित्यिक संस्था वागीश्वरी काव्य निर्झरिणी का तृतीय वार्षिकोत्सव दिनांक 18 जनवरी 2026 को अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी के रूप में भारतीय समयानुसार सायं 5.00 बजे ऑनलाइन माध्यम (गूगल मीट) से अत्यंत गरिमामय साहित्यिक वातावरण में सम्पन्न हुआ। इस पावन अवसर पर देश-विदेश से जुड़े लब्ध-प्रतिष्ठ साहित्यकारों एवं काव्य-मनीषियों की सारस्वत उपस्थिति रही। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. मृदुल कीर्ति (अटलांटा, अमेरिका) ने की। मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. कविता प्रसाद (वाराणसी), छायावादी महाकवि जयशंकर प्रसाद की प्रपौत्री, की गरिमामयी उपस्थिति ने कार्यक्रम को विशेष गौरव प्रदान किया। कार्यक्रम का शुभारंभ संस्था के संस्थापक अध्यक्ष डॉ. अर्जुन गुप्ता 'गुंजन' के मार्गदर्शक उद्बोधन से हुआ। विभा रंजन सिंह ने मधुर कंठ में माँ सरस्वती की वंदना प्रस्तुत करके मंत्र-मुग्ध कर दिया। तत्पश्चात विनीता निर्झर ने स्वागत उद्बोधन प्रस्तुत किया। इसके बाद विभा रंजन सिंह के कुशल सञ्चालन में कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। सर्वप्रथम पटल व्यवस्थापक दुर्गादत्त मिश्र %बाबा%् ने पटल के बारे में अपना अनुभव साझा किया तथा काव्य-पाठ प्रस्तुत किया। इसके बाद पटल सलाहकार क्षमा पांडेय ने संस्था की साहित्यिक यात्रा एवं उपलब्धियों पर प्रकाश डाला तथा अपना काव्य-पाठ प्रस्तुत किया। वरिष्ठ संरक्षक विनीता निर्झर ने इस साहित्यिक मंच से सम्बंधित अपने अनुभव से सभी को अवगत कराया। तत्पश्चात डॉ अर्जुन गुप्ता गुंजन ने इस मंच की स्थापना, साहित्यिक गतिविधियों तथा आगामी संकल्पना से सभी को अवगत कराया। आपने बताया कि छंदों की पाठशाला/ कार्यशाला में अब तक?? नब्बे (90) छंद सिखाया गया है तथा इस पटल के तत्वावधान में ÷संचेतना के स्वर÷ नामक त्रैमासिक साहित्यिक पत्रिका का संपादन भी किया जाता है। आपने बताया कि हिन्दी साहित्य का इतिहास पर? क्रमवार ऑनलाइन संगोष्ठियाँ भी? संचालित की जाती हैं। विविध भावी योजनाओं के बारे में भी बताया। इसके बाद विशिष्ट अतिथियों के रूप में डॉ. स्मिता सिंह (सिंगापुर), डॉ. मंजु रुस्तगी (चेन्नई), डॉ. अतिला कोतलावल (श्रीलंका) एवं आ. अनुराधा चंदर (न्यूयॉर्क, अमेरिका) ने अपने विचारों से तथा अपने काव्य-पाठ से साहित्यिक चेतना को समृद्ध किया। तत्पश्चात् डॉ अर्जुन गुप्ता %गुंजन%् ने प्रसाद-साहित्य पर प्रकाश डालने के बाद मुख्य अतिथि डॉ कविता प्रसाद को उद्बोधन के लिए आमंत्रित किया, जो कि सुप्रसिद्ध छायावादी कवि जयशंकर प्रसाद की प्रपौत्री हैं। डॉ कविता प्रसाद ने प्रसाद जी के सम्पूर्ण व्यक्तित्व तथा कृतित्व के बारे में विस्तार? से बताया। आपने तत्कालीन पारिवारिक माहौल की भी चर्चा की। आपने प्रसाद जी? द्वारा विरचित नाटकों की विशेषताओं तथा उनके मंचन के बारे में बताया तथा कामायनी महाकाव्य की? पृष्ठभूमि पर भी प्रकाश डाला। आप जयशंकर प्रसाद ट्रस्ट की अध्यक्ष हैं तथा ट्रस्ट के द्वारा किए जा रहे विभिन्न कार्यकलापों के बारे में बताया। उन्होंने बताया कि महाकवि प्रसाद के साहित्य में निहित भारतीय ज्ञान तथा दर्शन को वैश्विक साहित्य के क्षितिज पर पहुँचाना आपके जीवन का उद्देश्य बन चुका है।

शिक्षाविद् डॉ. निशा अग्रवाल एशिया बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड से सम्मानित

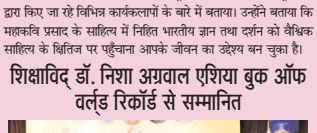

नई दिल्ली, । आईटीओ स्थित राजेंद्र भवन ऑडिटोरियम में आयोजित ÷हिंदी चेतना शिखर-2026÷ अंतरराष्ट्रीय सम्मान समारोह में जयपुर की प्रतिष्ठित शिक्षाविद, शोधकर्ता एवं पाठ्यपुस्तक लेखिका डॉ. निशा अग्रवाल को एशिया बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स द्वारा वर्ल्ड रिकॉर्ड होल्डर के रूप में सम्मानित किया गया। डॉ. निशा अग्रवाल को यह प्रतिष्ठित सम्मान जगत धर्म चक्रवर्ती, सौहार्द शिरोमणि संत डॉ. सौरभ पांडे जी के जीवन, दर्शन, विचारधारा एवं समकालीन प्रासंगिकता पर आधारित उनके विस्तृत और मौलिक शोधग्रंथ के लिए प्रदान किया गया। यह शोधकार्य प्रो. जनक प्रसाद के अकादमिक मार्गदर्शन में संपन्न हुआ। एशिया बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स ने इस शोध को आध्यात्मिक अनुसंधान, मानवीय मूल्यों, अंतरधार्मिक सौहार्द एवं समकालीन विचार-नेतृत्व के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि मानते हुए अपने अभिलेखों में दर्ज किया। समारोह में देश-विदेश के प्रमुख अतिथियों स्सायाचार्य डॉ. ई. माड़े धर्मयस (इंडोनेशिया), जनरल प्रो. जसवीर सिंह (आधिकारिक प्रतिनिधि-संयुक्त राष्ट्र 7 अमेरिका), डॉ. इंद्रजीत शर्मा (देवनागरी प्रवर्तक, अमेरिका), डॉ. बी. एल. गौड़ (ख्यातिलब्ध साहित्यकार एवं उद्योगपति), डॉ. चिंगशुओं 'जोया' झांग, प्रो. (डॉ.) देवेश कुमार मिश्र (संस्कृत विभाग, इग्नू, नई दिल्ली), जगत धर्म चक्रवर्ती सौहार्द शिरोमणि डॉ. सौरभ पांडे जी (प्रमुख-धराधाम, गोरखपुर) तथा डॉ. नारायण यादव (एम.डी., एबीडब्ल्यूआर), अंतरराष्ट्रीय लेखक, पत्रकार-विचारक एवं वर्ल्ड रिकॉर्ड होल्डर डॉ. शंभु पंवार मंचासिन रहे।उल्लेखनीय है कि डॉ. निशा अग्रवाल अब तक 30 से अधिक पुस्तकों की रचना कर चुकी हैं। उनकी रचनाएँ कॉलेज शिक्षा के साथ-साथ उत्तर प्रदेश बोर्ड एवं सीबीएसई बोर्ड के पाठ्यक्रमों में सम्मिलित हैं। हिंदी भाषा, शिक्षा, भारतीय संस्कृति और मानवीय मूल्यों को समर्पित उनका लेखन उन्हें शिक्षा जगत में विशिष्ट पहचान दिलाता है।

डॉ शिखा का रायपुर में मकस द्वारा भव्य सम्मान

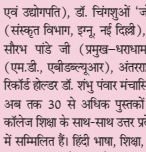

रायपुर (छ. ग.)। सांतिनगर के विमतारा भवन में महिला कल्याण समिति, झारखंड के तत्वावधान में आयोजित एक भव्य साहित्यिक कार्यक्रम में सुप्रसिद्ध लेखिका / कवयित्री डॉ. शिखा गोस्वामी निहारिका का विशेष रूप से शानदार स्वागत कर सम्मानित किया गया। यह आयोजन विशेष रुप से डॉ. शिखा के लिए ही रखा गया था। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथियों के साथ डॉ. शिखा द्वारा दीप प्रज्ज्वलन कर किया गया। इस अवसर पर प्रधान संपादक डॉ. श्याम कुंवर भारती, हिंदी विद्यापीठ के कुलपति, कुल सचिव इंद्रजीत तिवारी निर्भीक तथा माया फाउंडेशन के प्रधान डॉ.महेंद्र कुमार ठाकुर के कर-कमलों द्वारा डॉ. शिखा गोस्वामी निहारिका का श्रीफल, अंगवस्त्र, 3 स्मृति-चिह्न (काव्य महारथी, काव्य रत्न व काव्य महारथी काठमांडू) तथा तीन सम्मान-पत्र भेंट किए गए। समारोह को संबोधित करते हुए डॉ. श्याम कुंवर भारती ने कहा कि %शिखा एक ऐसी साहसी बेटी हैं, जो दूसरों के लिए प्रेरणा हैं। स्वयं कठिन परिस्थितियों से जूझते हुए भी उनके होंठों की मुस्कान कभी कम नहीं होती, और यही मुस्कान लोगों को आगे बढ़ने की शक्ति देती है। गोण्डा (उ.प्र.) के वरिष्ठ कवि साहित्यकार यमराज मित्र सुधीर श्रीवास्तव ने शिखा की जिजीविषा को नमन करते हुए कहा कि तमाम चुनौतियों को धता बताते हुए अपने जूनून से इतनी कम उम्र की एक बच्ची ने मील का पत्थर स्थापित कर अपनी बड़ी लकीर स्वयं से खींच कर अपनी पहचान को जो प्रेरक आयाम दिया है, वह अपने आप में एक मिसाल है।

घर को तोड़ दिया

रात को लगभग 11ः30 बजे के करीब छोटे जेठ जी का फोन आया। मेरे बेटे की तबीयत थोड़ी खराब थी इसलिए इन्होंने उनका फोन नहीं उठाया और फोन नहीं उठाने का एक कारण यह भी था कि उन लोगों की बेतुकी बातें सुन कर हमारे नींद चैन सब उड़ जाते हैं। रात तो बीत गई सुबह फोन सर पे ही खड़ी थी । इन्होंने जैसे ही फोन उठाया भाई साहब ने अपने भीतर का सब लावा इन पे उड़ेल दिया।लगभग ढाई महीने से ससुर जी उनके पास ही रह रहे थे। और सासु जी बड़ी जेठानी जी के पास । कितनी सेवा कितना सम्मान और खान पान सब कर रहे थे। मगर ससुर जी के मुख से एक शब्द भी नहीं निकला कि हा तुम लोगों ने मेरी बहुत सेवा की है। ऊपर से सासु जी बड़ी बहू के नाम का माला दिन रात जपते रहती है। ऐसी भी कोई कडू में तीर नहीं मार दी है जेठानी जी ने ।।

सासू जी का बार बार बड़ी जेठानी जी की तरफ से खड़ी होना हम से सीधे मुंह बात ना करना हम से नफ़रत करना गाली गलौज करना और फिर चुगली करना

हमारे घर की सारी बातें उन तक पहुंचाना । ये सब मुझे बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगता है। हमारे और उनके बीच झगड़े की जड़ उनका व्यवहार ही है। सारा काम हम से और हमारे बच्चों से करवाती है और जब कुछ देने की बारी आती है । तो उनको बड़ी बहू अपनी तरफ खींच लेती है। बड़ी बहू नाच गाना करती है। रील बनाती है।

सासु जी से घर का सारा काम करवाती है। गाना गंवाती है। जिससे वो पैसे कमाती है। समाज में उनके नाम पे सब थू थू कर रहे हैं। जितने भी दोस्तों रिश्तेदारों से बात होती है। सब हंसते हैं हम पे और हमारे परिवार पे..!! सब यही कहते हैं खानदान का खूब नाम रौशन किया है । तुम्हारे सास ससुर और जेठानी ने ।। कल तक जो ये कहते नहीं थकते थे । की हम खानदानी लोग हैं। आज अचानक बदल कैसे गये ।बाप दादाओं की कमाई इज्जत मिट्टी में मिला दी ।। अरे नाचना हमारा काम नहीं ।चौधरियों का तो शौक होता है । नचवाने का मगर तुम्हारे ससुर के दिमाग की तो दाद देनी पड़ेगी बहू के साथ मिल कर क्या रील बनाते हैं। कैसी कैसी बातें करते हैं। बाहर समाज वाले ससुर और बहू को लेकर क्या क्या बातें कर रहे हैं। मगर इन सब बातों से उनको कोई फर्क नही पड़ता है। उनका कहना है कि वो पैसे कमाने के लिए रील नहीं बनाती है । बल्कि खुश रहने के लिए नाचती गाती है। पर समाज वाले जानना चाहते हैं कि उनके जीवन में कौन सा ऐसा दुःख है । जिससे बाहर निकलने के लिए उन्हें रील का सहारा लेना पड़ रहा है। सब कुछ तो ठीक है। वो स्वास्थ्य है। अपना घर है सास अपनी ससुर अपना है। बेटी का ब्याह करोड़पती के घर में हो गयी है। बेटा भी अब नौकरी करने लगा है। सास समय समय पर गहने जेवर साड़ी कपड़े और नगद सब देती ही रहती है। उनके पक्ष में बोलती है। उन्हें सपोर्ट करती है। अब क्या चाहिए जेठानी जी को ..!! आज चौधरी परिवार का नाम मिट्टी में मिल गया है। सब उनकी ही बदौलत ÷ हमारे सास ससुर तो हमें अपना मानते ही नहीं है। उनकी नजर में दुनिया का सबसे बेवकुफ हम लोग ही हैं। इतना ही नहीं । मुझ से भी छोटे देवर देवरानी के साथ जब पिछले बरस में लोग गये थी ।उनके पास भी इन्होंने यही तमाशा किया । उन के पैसों से सारे तीर्थ कर लिए दोनों आंखों का आपरेशन करवा लिए जिस में उन लोगों का लाखों का खर्चा हुआ और फिर उन लोगों को ही गाली देने लगी झगड़े करने लगी। देवर जी की बेटी ब्याहने योग्य है। एक बार देवरानी ने सासु जी से बंटवारे की बात कही थी । ताकी वो अपने अनुसार गांव में अपनेलिए घर बना सके । और उसके बाद शादी की बात शुरु कर सके मगर नहीं मेरी प्यारी सासु ने उसकी जरुरत को समझने की वजह उसे घर तोड़ने वाली, घर में आग लगाने वाली और न जाने क्या क्या नाम दें दिया ।इतना ही नहीं दोनों पति पत्नी के बीच अक्सर सासु जी के कारण झगड़ें लड़ाइयां भी होती रहती है। हमलोग तो फिर भी जैसे तैसे परिवारिक मामलों में बोल ही देते हैं। बेचारी देवरानी उसे तो सास कभी पारिवारिक मामलों में दखल नहीं देने देती है। क्यों की उन्हें पता है। देवरानी के सवालों का जबाव वो नहीं दे सकेगी । देवरानी पढ़ी लिखी है । बड़े घर की बेटी है।

उसके सर पे उसके मामा पिता का आशीर्वाद है।
देवर जी की भी समझदारी की दाद देनी पड़ेगी ।

सबकुछ जानते हुए भी चुप्पी साधे रहना आसान बात नहीं है। शायद उन्हें पता नहीं चुप रहना हर समस्या का सामाधान नहीं । वो तो देवरानी जैसी नेक बीबी उन्हें मिल गयी है । इसलिए नहीं तो जो व्यवहार सास उसके साथ करती है। कोई और बहू होती तो उल्टा वहीं व्यवहार सास के साथ करती तो उन्हें पता चलता मान और अपमान के बीच का फर्क क्या होता है। सबकुछ किस्मत से ही मिलता है। हमारी किस्मत में ये सुरस्या सास ही लिखी थी मेरी सास में ज्ञान के साथ साथ स्नेह का भी प्रत्यक्ष अभाव दिखता है। पता नहीं एक स्त्री होकर अपने जनाब बेटों के साथ कैसे वो अनाप शनाप बातें कर लेती है। ममता मोह रत्ती भर भी उन में नहीं है। सासु जी घर को तोड़ दिया है। अपने ही बेटों को एक दूसरे के खिलाफ खड़ा करके दिया है और स्वयं भी हमारे खिलाफ खड़ी है।

– किरण काजल बेगलुरु

जब पढ़ा खड़ा हो और अनपढ़ बैठा हो: लोकतंत्र में शिक्षा का अपमान

किसी भी सभ्य समाज की पहचान उसकी शिक्षा व्यवस्था और उस शिक्षा को मिलने वाले सम्मान से होती है। शिक्षा केवल डिग्रियों का संग्रह नहीं, बल्कि विवेक, अनुशासन, संवैधानिक समझ और सार्वजनिक जिम्मेदारी का संस्कार है। सवाल यह है कि क्या भारत जैसा लोकतंत्र सचमुच इस शिक्षा का सम्मान कर रहा है, या सत्ता के गलियारों में पढ़े लिखे लोग केवल आदेश पालन की मुद्रा में खड़े रहने के लिए ही नियत कर दिए गए हैं।

भारत में लाखों युवा वर्षों तक कठिन तैयारी, असफलता और संघर्ष के बाद सिविल सेवाओं तक पहुँचते हैं। वे संविधान, प्रशासन, अर्थव्यवस्था, समाजशास्त्र और नीति निर्माण के गंभीर अध्ययन के बाद आईएएस, आईपीएस या अन्य सेवाओं में आते हैं। चयन के बाद भी लंबा प्रशिक्षण, फील्ड पोस्टिंग और निरंतर जवाबदेही उनका हिस्सा होती है। दूसरी ओर कई बार वही अफसर ऐसे जनप्रतिनिधियों के सामने हाथ बाँध कर खड़े दिखते हैं, जिनकी शैक्षणिक पृष्ठभूमि और प्रशासनिक समझ बेहद सीमित होती है। यही वह दृश्य है, जहाँ व्यंग्य नहीं, व्यवस्था की सच्चाई बोलती है– अनपढ़ बैठे हैं, पढ़ा खड़ा है। एक सिविल सेवक बनने की यात्रा वर्षों की साधना है। परीक्षा केवल तथ्यों का नहीं, सोचने की क्षमता, विश्लेषण, नैतिकता और दबाव में निर्णय लेने की क्षमता का परीक्षण करती है। सेवा में आने के बाद भी हर फाइल, हर आदेश, हर हस्ताक्षर भविष्य की जांच परख की कसौटी पर खरा उतरना होता है। इसके उलट, राजनीति में प्रवेश के लिए न किसी न्यूनतम शैक्षणिक योग्यता की शर्त है, न नीति या प्रशासन का औपचारिक प्रशिक्षण अनिवार्य है। जनसमर्थन लोकतंत्र की आत्मा है, लेकिन जब वही जनसमर्थन पूरे तंत्र में योग्यता के अभाव को ढकने का आवरण बन जाए, तब समस्या शुरू होती है। लोकतंत्र का अर्थ जनता का शासन है, लेकिन लोकतंत्र कभी भी अज्ञान का उत्सव नहीं रहा। सफल लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं में राजनीतिक नेतृत्व और पेशेवर प्रशासन, दोनों को महत्व दिया गया है। वहाँ निर्णय लेने के मंच पर भावनाएँ नहीं, तथ्यों और तर्क की भी जगह होती है। हमारे यहाँ स्थिति यह बनती जा रही है कि बहस में शोर अधिक है, अध्ययन कम। आरोप प्रत्यारोप की गर्मी अधिक है, आंकड़ों तथ्यों की रोशनी कम। ऐसे माहौल में अफसरशाही, जो ज्ञान और प्रक्रिया की प्रतिनिधि है, केवल आदेश मानने वाली मशीन तक सीमित कर दी जाती है। यही मानसिकता उस दृश्य को जन्म देती है–कुर्ता बैठा है, वर्दी खड़ी है। स्वतंत्र भारत की कल्पना में खादी और खाकी एक दूसरे के पूरक माने गए थे। खादी जनमत, राजनीति और नीति निर्माण का प्रतीक थी, खाकी कानून, व्यवस्था और निष्पक्ष क्रियान्वयन की। दोनों के बीच सम्मान आधारित रिश्ते से ही सुशासन की नींव रखी जानी थी। आज स्थिति यह है कि खादी कई बार संख्या बल और पद की शक्ति के सहारे अपनी बात थोपती दिखती है, और खाकी स्थानांतरण, प्रतिशोध या झूठे आरोपों के डर से विवेकपूर्ण सलाह देने से कतराने लगती है। अफसर यह सोचने लगे हैं कि ÷सही क्या है÷ से ज़्यादा महत्वपूर्ण ÷ऊपर क्या चाहते हैं÷ है। यह मानसिकता न केवल प्रशासनिक नैतिकता को कमजोर करती है, बल्कि कानून के राज पर भी प्रश्नचिह्न लगाती है। इस वातावरण का सीधा असर समाज में शिक्षा की छवि पर पड़ता है। जब युवाओं को बार बार यह दृश्य दिखता है कि जिसने वर्षों पढ़ाई की, प्रतियोगी परीक्षाएँ पास कीं, प्रशिक्षण लिया, वही अंत में केवल खड़ा है; और जिसने बिना किसी तैयारी के राजनीति की सीढ़ी चढ़ ली, वही बैठ कर अंतिम निर्णय ले रहा है, तो स्वाभाविक रूप से निराशा जन्म लेती है। संदेश साफ़ होता है– शिक्षा से सत्ता नहीं मिलती, ज्ञान से निर्णय नहीं होते और मेहनत से सम्मान सुनिश्चित नहीं। धीरे धीरे शिक्षा समाज को दिशा देने का माध्यम नहीं, केवल नौकरी पाने का जरिया बनकर रह जाती है। विडंबना यह भी है कि जब नीतियाँ असफल होती हैं, योजनाएँ धरातल पर नहीं उतरतीं या भ्रष्टाचार सामने आता है, तो सबसे पहले निशाने पर भी अफ़सर ही होते हैं। वास्तविकता यह है कि अधिकतर बड़े फैसले राजनीतिक स्तर पर लिए जाते हैं, अफसर उस नीति के क्रियान्वयनकर्ता होते हैं। फिर भी असफलता की पूरी जिम्मेदारी उन्हीं के सिर पर डाल दी जाती है। यह दोहरा अन्याय है–निर्णय में भागीदारी सीमित, लेकिन जवाबदेही पूरी। परिणाम यह होता है कि ईमानदार और साफ गोई से काम करने वाले अधिकारी हतोत्साहित होते हैं और ÷चुप रहना, जो कहा जाए वही करना÷ सुरक्षित विकल्प बन जाता है। जब भी यह सवाल उठाया जाता है कि क्या नीति निर्माण के लिए ÷न्यूनतम शिक्षा और प्रशासनिक समझ आवश्यक होनी चाहिए, तब तुरंत तर्क दिया जाता है कि ÷क्या आप जनप्रतिनिधियों की वैधता पर सवाल उठा रहे हैं?÷ साफ़ होना चाहिए कि सवाल वैधता का नहीं, क्षमता का है। जनप्रतिनिधि जनता के वोट से आते हैं, यह उनकी लोकतांत्रिक वैधता है और इसका सम्मान जरूरी है। लेकिन क्या जनादेश अपने आप में हर क्षेत्र की विशेषज्ञता का प्रमाणपत्र है? क्या करोड़ों लोगों पर असर डालने वाले निर्णय केवल राजनीतिक चतुराई, जातीय समीकरण या चुनावी लाभ हानि को ध्यान में रखकर लिए जाने चाहिए? सवाल सीधा है–यदि डॉक्टर, इंजीनियर, शिक्षक, यहां तक कि एक साधारण क्लर्क की नौकरी के लिए भी योग्यता और परीक्षा जरूरी है, तो एक बड़े मंत्रालय का नेतृत्व बिना किसी प्रशिक्षण और न्यूनतम बौद्धिक तैयारी के कैसे सम्भव माना जा सकता है? लोकतंत्र का अर्थ यह नहीं कि ÷जो चुन कर आए, वह सब जानता ही होगा÷; लोकतंत्र का अर्थ यह है कि चुना हुआ नेतृत्व विशेषज्ञों, प्रशासनिक अनुभव और संवैधानिक मूल्यों की मदद से निर्णय ले।

समाधान अफसरों को सर्वोच्च बना देने में नहीं है, न ही जनप्रतिनिधियों को कमतर साबित करने में। समाधान संतुलन में है। जनप्रतिनिधि नीति की दिशा तय करें, प्राथमिकताएँ निर्धारित करें; अफसर उस दिशा को संवैधानिक ढांचे और प्रशासनिक व्यावहारिकता के अनुरूप आकार दें। इसके लिए कुछ कदम आवश्यक हैं– जनप्रतिनिधियों के लिए अनिवार्य संवैधानिक और प्रशासनिक प्रशिक्षण, नए विधायकों और मंत्रियों के लिए व्यवस्थित ओरिएंटेशन प्रोग्राम, समितियों में विशेषज्ञों और शोध संस्थानों की सक्रिय भागीदारी, तथा अफसरशाही को ऐसी पेशेवर स्वतंत्रता, जहाँ वह भय नहीं, विवेक के साथ सलाह दे सके। सबसे ज़रूरी यह स्वीकार करना है कि शिक्षा को केवल परीक्षा कक्ष तक सीमित नहीं रखा जा सकता; उसे निर्णय कक्ष तक भी पहुँचाना होगा। लोकतंत्र में सवाल पूछना, योग्यता की बात करना या शिक्षा का सम्मान मांगना, लोकतंत्र विरोधी नहीं, बल्कि लोकतंत्र समर्थ कदम हैं। जनता का जनादेश सर्वोच्च है, लेकिन वही जनादेश यह भी चाहता है कि निर्णय सोच समझ कर, तथ्यों और तर्क के आधार पर हों। जब तक यह दृश्य बना रहेगा–अनपढ़ बैठे हैं, पढ़ा खड़ा है; कुर्ता बैठा है, वर्दी खड़ी है; खादी बैठी है, खाकी खड़ी है–तब तक यह कहना कठिन होगा कि हमने शिक्षा को सचमुच सम्मान दिया है। लोकतंत्र का उद्देश्य केवल सत्ता हस्तांतरण नहीं, विवेकपूर्ण शासन है। और विवेक शिक्षा, ज्ञान और योग्यता से ही आता है। भारत यदि सचमुच एक परिपक्व लोकतंत्र बनना चाहता है, तो उसे तय करना होगा कि वह शिक्षा को केवल डिग्री और नौकरी तक सीमित रखेगा, या उसे शासन और नीति निर्माण के केंद्र तक पहुँचने देगा। जिस दिन पढ़ा लिखा केवल खड़ा नहीं, बल्कि सम्मान के साथ निर्णय लेते हुए दिखाई देगा, उसी दिन कहा जा सकेगा कि इस देश में शिक्षा का मज़ाक नहीं, उसका सम्मान हो रहा है।

(डॉ. सत्यवान सौरभ, पीएचडी (राजनीति विज्ञान), एक कवि और सामाजिक विचारक है।)

परीक्षा पर चर्चा

शिक्षा का वास्तविक अर्थ केवल सूचनाओं का संग्रहण नहीं, बल्कि मानवीय चेतना का वह परिष्कार है जो व्यक्ति को विषम परिस्थितियों में भी स्थिर रहना सिखाता है। आज जब हम आधुनिकता के संक्रमण काल में खड़े हैं, तब %परीक्षा%् शब्द एक शैक्षणिक प्रक्रिया से अधिक एक सामाजिक-मनोवैज्ञानिक दबाव का केंद्र बन गया है। इस जड़ता को तोड़ने और राष्ट्र की युवा ऊर्जा को भयमुक्त करने की दिशा में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा प्रवर्तित %परीक्षा पर चर्चा%् एक अभूतपूर्व वैचारिक अनुष्ठान है। वर्ष 2026 के इस दौर में, जहाँ भारत वैश्विक व्यवस्था की धुरी बन रहा है, प्रधानमंत्री की प्राथमिकताएं अत्यंत स्पष्ट हैं। एक ओर वे रूस जैसे महाशक्तियों के साथ वैश्विक शांति और कूटनीतिक संतुलन बनाने के लिए निरंतर अत्यंत व्यस्त कार्यक्रम (बिजी शेड्यूल) का निर्वहन कर रहे हैं, वहीं दूसरी ओर देश के %एग्जाम वॉरियर्स%् के साथ उनका यह आत्मीय संवाद यह सिद्ध करता है कि एक सशक्त राष्ट्र का निर्माण केवल सीमाओं की सुरक्षा से नहीं, बल्कि युवा मस्तिष्क की मानसिक सुदृढ़ता से होता है। यह प्रधानमंत्री की दूरदर्शिता ही है जो बोर्ड परीक्षाओं के तनावपूर्ण वातावरण को एक उत्सव में रूपांतरित कर रही है।

इस पूरी प्रक्रिया में नई शिक्षा नीति की भूमिका एक आधारशिला के रूप में उभरकर आई है, जो पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों के पारंपरिक बोझ को कम कर छात्र के सर्वांगीण विकास का मार्ग प्रशस्त करती है। अब पाठ्यक्रम केवल रटने की वस्तु नहीं, बल्कि जीवन की वास्तविकताओं से जुड़ने का माध्यम है। इसी के समांतर, छात्र की अवस्था और उसके संवेगों का प्रबंधन सबसे महत्वपूर्ण कड़ी है। किशोरावस्था के चंचल संवेगों के बीच जब छात्र स्वयं को बोर्ड परीक्षाओं की दहलीज पर पाता है, तो उसे केवल ज्ञान की नहीं, बल्कि संवेगात्मक स्थिरता की आवश्यकता होती है। यहाँ %परीक्षा पर चर्चा%् उसे सिखाती है कि असफलता जीवन का अंत नहीं, बल्कि सुधार का एक अवसर है। छात्र की भूमिका अब केवल एक %परीक्षार्थी%् की नहीं, बल्कि एक ऐसे %वॉरियर%् की है जो अंकों के लिए नहीं, बल्कि अपने व्यक्तित्व के निखार के लिए संघर्ष करता है।

शिक्षक की भूमिका इस वैचारिक परिवर्तन में एक %मशाल वाहक%् की तरह है। वर्तमान युग में शिक्षकों को अपने पारंपरिक कठोर रवैये का त्याग कर एक सुगमकर्ता और संवेदनशील मित्र की भूमिका स्वीकार करनी होगी। शिक्षक का सहयोग केवल सिलेबस पूरा करने तक सीमित न रहकर छात्र के भीतर आत्मविश्वास का बीज बोने तक विस्तृत होना चाहिए। जब शिक्षक छात्र की मानसिक अवस्था को समझकर उसे सहयोग देता है, तो परीक्षा का भय स्वतः ही समाप्त हो जाता है। इसके साथ ही, अभिभावक की भूमिका किसी %पुलिसकर्मी%् की न होकर एक %सुरक्षा कवच%् की होनी चाहिए। अभिभावकों को यह आत्मसात करना होगा कि उनके बच्चे का मूल्य किसी रिपोर्ट कार्ड के अंकों से नहीं आंका जा सकता। घर का वातावरण यदि दबाव के बजाय धैर्य और विश्वास पर आधारित है, तो बच्चा बड़े से बड़े लक्ष्य को सहजता से प्राप्त कर लेता है।

आज के डिजिटल युग में सोशल मीडिया की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता। यह जहाँ सूचनाओं का संवाहक है, वहीं छात्रों के लिए %डिस्ट्रैक्शन%् और %तुलनात्मक अवसाद%् का कारण भी बनता है। यहाँ समाज की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। समाज को सफलता की अपनी परिभाषा बदलनी होगी। समाज का रवैया यदि केवल टॉपरों की जय-जयकार करने का रहेगा, तो औसत छात्र हमेशा हीनभावना से ग्रस्त रहेगा। वातावरण की भूमिका ऐसी होनी चाहिए जहाँ असफलता को कलंक नहीं, बल्कि सीखने का एक पड़ाव माना जाए। %परीक्षा पर चर्चा%् समाज को यह संदेश देती है कि हमें एक ऐसा पारिस्थितिकी तंत्र बनाना है जहाँ प्रत्येक छात्र अपनी क्षमता के अनुरूप खिल सके।

%परीक्षा पर चर्चा%् की उपयोगिता इसके तात्कालिक समाधानों में नहीं, बल्कि इसके दूरगामी सांस्कृतिक प्रभाव में निहित है। यह संवाद छात्रों को आत्म-मंथन के लिए प्रेरित करता है और उन्हें सिखाता है कि जीवन की किसी भी परीक्षा में एकाग्रता और दृढ़ता ही वास्तविक सफलता की कुंजी है। जब देश का प्रधान सेवक अपने समस्त अंतरराष्ट्रीय उत्तरदायित्वों और रूस जैसे देशों की यात्राओं के थकान भरे कार्यक्रमों के बाद भी बच्चों की आँखों में भविष्य का सपना देखता है, तो वह पूरे राष्ट्र को यह विश्वास दिलाता है कि भारत का भविष्य सुरक्षित हाथों में है। यह आलेख आह्वान है उस सामूहिक जिम्मेदारी का, जहाँ छात्र, शिक्षक, अभिभावक और समाज मिलकर %परीक्षा%् को एक बोझ नहीं, बल्कि सामर्थ्य की पहचान का एक गरिमामयी उत्सव बनाएं।

शैल यादव, लतीफपुर बेलहट कोरांव प्रयागराज उत्तर प्रदेश पिन 212302, संपर्क 9935780754

ग्रीनलैंड के मामले में अमेरिका और यूरोप आमने-सामने!

अंतरराष्ट्रीय कूटनीति के मंच पर एक बार फिर उथल-पुथल के संकेत मिल रहे हैं। ग्रीनलैंड , जो अब तक बर्फ, खनिज संसाधनों और सामरिक स्थिति के कारण चर्चा में रहता था।आज अमेरिका और यूरोप के बीच संभावित टकराव का केंद्र बनता दिख रहा है। इसी पृष्ठभूमि में यूरोपीय डोनाल्ड ट्रंप द्वारा लगभग 10 यूरोपीय देशों पर 10त्न टैरिफ लगाने की धमकी ने अटलांटिक के दोनों किनारों पर राजनीतिक तापमान बढ़ा दिया है।

ग्रीनलैंड-केवल द्वीप नहीं, रणनीतिक धुरी- ग्रीनलैंड भले ही डेनमार्क के अधीन स्वायत्त क्षेत्र हो, लेकिन इसकी भौगोलिक स्थिति इसे अमेरिका, रूस और यूरोप तीनों के लिए रणनीतिक रूप से अत्यंत महत्वपूर्ण बनाती है। आर्कटिक में बढ़ती सैन्य-आर्थिक गतिविधियाँ, दुर्लभ खनिज संसाधन और नए समुद्री मार्ग । इन सबने ग्रीनलैंड को वैश्विक शक्ति संतुलन का अहम मोहरा बना दिया है। अमेरिका लंबे समय से यहां अपनी भूमिका मजबूत करना चाहता रहा है, जबकि यूरोप इसे अपनी संप्रभुता और क्षेत्रीय संतुलन से जोड़कर देखता है।

ट्रंप की टैरिफ नीति-दबाव की कूटनीति? डोनाल्ड ट्रंप की राजनीति का एक स्थायी तत्व रहा है टैरिफ को हथियार बनाना। यूरोपीय देशों पर 10त्न टैरिफ की धमकी केवल व्यापारिक नहीं, बल्कि राजनीतिक संदेश भी है। ÷अमेरिकी हित सर्वोपरि हैं।÷ यह नीति यूरोप के लिए सीधी चुनौती है, क्योंकि श्व पहले से ही अमेरिकी संरक्षणवाद को वैश्विक व्यापार नियमों के खिलाफ मानता रहा है।

क्या ट्रंप वैश्विक शांति के लिए घातक? यह सवाल केवल आलोचना नहीं, बल्कि गंभीर चिंतन की मांग करता है। ट्रंप की "America First" नीति ने कई बार बहुपक्षीय संस्थाओं, गठबंधनों और समझौतों को कमजोर किया है।

नाटो पर दबाव- व्यापार युद्धों की शुरुआत सहयोगियों के बजाय प्रतिद्वंद्वियों से सौदेबाज़ी इन सबका संयुक्त प्रभाव वैश्विक स्थिरता पर पड़ता है। शांति केवल युद्ध न होने का नाम नहीं, बल्कि विश्वास, संवाद और सहयोग का भी परिणाम होती है और यही तत्व ट्रंप की रणनीति में अक्सर कमजोर दिखते हैं।

क्या US और EU में होगा टकराव? पूर्ण टकराव शायद नहीं, लेकिन रणनीतिक तनाव लगभग तय है। यूरोप अब पहले से अधिक आत्मनिर्भर और मुखर होने की कोशिश कर रहा है ।चाहे वह रक्षा हो, ऊर्जा नीति हो या विदेश नी